मृच्छकटिक

सूक्ति : रत्नं रत्नेन संगच्छते।

सन्दर्भ : प्रस्तुत सूक्ति मृच्छकटिक के प्रथम अंक से उद्धृत है।

प्रसंग : शकार तरह-तरह के उपाय द्वारा वसन्तसेना को अपने वश में करना चाहता है; परन्तु वसन्तसेना किसी भी तरह उसके वश में नहीं आती।

अनुवाद : (विट कहता है कि) रत्न रत्न के साथ संयुक्त होता है अर्थात् रत्न रत्न से ही मिलता है। इसका आशय यह है कि योग्य का मेल योग्य से ही होता है।

व्याख्या : एक रात वसन्तसेना का पीछा करते हुए शकार विट से कहता है कि जन्म से दासी यह वेश्या (वसन्तसेना) कामदेवायतन-उद्यान (अर्थात् उस उद्यान में जिसमें कामदेव का मन्दिर है) में जाने से लेकर उस दरिद्र-चारुदत्त से प्रेम करने लगी है और मुझे नहीं चाहती। आप ऐसा उपाय कीजिए कि वह हमारे वश में हो जाय। इस पर विट शकार से कहता है कि रत्न रत्न से ही मिलता है अर्थात् योग्य का मेल योग्य से ही होता है। वसन्तसेना उदार, सरल, बड़ों का सम्मान करने वाली, पवित्र प्रेम की उपासिका और कुलीन स्त्री के समान आचरण करने वाली है। इसी

Scanned with CamScanner

पृष्ठ-2

प्रकार चारुदत्त में मनुष्य के सभी गुण और विशेषताएँ विद्यमान हैं अर्थात् चारुदत्त किसी को दुःख न देने वाले, उपकारी, सरल हृदय, मानव-मात्र से प्रेम करने वाले हैं। शकार दुष्ट, धूर्त, मूर्ख और घमण्डी है। इसीलिए वसन्तसेना चारुदत्त से प्रेम करती है। दोनें योग्य हैं और समान गुण वाले हैं। दोनों समान गुण होनें के कारण ही एक दूसरे को प्रेम करते हैं। इसी कारण कहा गया है कि रत्न रत्न से ही मिलता है अर्थात् योग्य का मेल योग्य से ही अच्छा लगता है।

Scanned with CamScanner